

सीएम ब्लॉग से

## जन-ऋषि पं. दीनदयाल उपाध्याय को शत-शत नमन

भारतीय दर्शन में मनुष्य की चेतना की सर्वोच्च वस्था वह मानी जाती है, जहां वह संपूर्ण सृष्टि को स्वयं के भीतर और स्वयं को संपूर्ण सृष्टि के भीतर अनुभव करता है। पढ़ने-लिखने और कहने-सुनने में यह बात बहुत आती है, लेकिन इसे जो व्यक्ति वास्तविक रूप से महसूस कर लेता है, वह देवतुल्य हो जाता है।

एकात्म मानववाद दर्शन के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय ऐसे ही महापुरुष थे। महापुरुषों में बचपन से ही कुछ विलक्षणता होती है। पंडितजी के बचपन का एक बड़ा प्रेरक प्रसंग है। उनकी किशोर अवस्था थी। वह सब्जी लेने बाजार गए और सब्जी बेचने वाली वृद्धा को चवन्नी का भुगतान कर दिया। घर लौटते समय उन्होंने जब टटोली तो देखा कि वह वृद्धा को खोटी चवन्नी दे आए हैं। उनका मन इतना दुःखी और द्रवित



हो गया कि वह दौड़ते हुए उस वृद्धा के पास गए और उससे क्षमा प्रार्थना के साथ खोटी चवन्नी वापस लेकर उसे खरी चवन्नी दे दी। महापुरुष ऐसे ही होते हैं। वे स्वयं कितने भी कष्ट उठा लें, लेकिन अपने कारण दूसरों को कष्ट नहीं होने देते। जीवनभर सादगी की प्रतिमूर्ति रहे पंडित दीनदयाल उपाध्याय, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के सर्वप्रिय जैसे ही नहीं बन गए थे। शिक्षा में हमेशा अव्वल रहने वाले पंडितजी की बुद्धि विलक्षण रूप से कुशाग्र थी, लेकिन कुशाग्र बुद्धि से कोई महापुरुष नहीं बनता। चित्त की निर्मलता का मेल होने पर ही वह जनकल्याणकारी सोच की ओर अग्रसर होता है। बहुत व्यापक अध्ययन करने वाले पंडित उपाध्याय सिर्फ किताबी ज्ञान से संपन्न नहीं थे। जिस व्यक्ति के पास स्वयं की अंतःप्रज्ञा नहीं होती, उसके लिए शास्त्रों के अध्ययन का कोई अर्थ नहीं। पंडितजी के पास अंतःप्रज्ञा थी। इसी के कारण वह मौलिक रूप से चिंतन कर सके। उन्होंने धर्म, अर्थशास्त्र, अध्यात्म, समाज, व्यक्ति सहित सभी विषयों पर मौलिक चिंतन कर सार्थक निष्कर्ष हमारे सामने रखे। पंडितजी की जितनी गति एक आदर्श मूलक राजनीति में थी, उतनी ही साहित्य में भी, एक ही बैठक में चंद्रगुप्त नाटक लिख लेना उनकी साहित्याभिरुचि का प्रमाण ही नहीं था, बल्कि इस बात का भी कि सरहदों को सुरक्षित रखने और देश के राजनीति एकीकरण के लक्ष्य उनकी नजर में कितने जरूरी थे। पंडितजी भारत के विकास के लिए भारतीय चिंतन को ही आधार बनाना चाहते थे। आइये, महामानव पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जन्म शताब्दी वर्ष में हम समाज के कमजोर वर्गों के हित में श्रेष्ठतम काम करने के अपने संकल्प को और मजबूत करें। स्वयं में दूसरों को देखें और दूसरों को स्वयं में एक ही चेतना या 'आत्म' को चराचर जगत में अनुस्यूत देखें। यही हमारी पंडितजी को सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

- लेखक मप के मुख्यमंत्री हैं।